तरसेम जी की सेवा में,

1, 2, 3- यू0बी0, यू0डी0 यू0एम0-यूनीवर्सल ब्रदरहुड़, यूनिवर्सल डिर्सामामेन्ट, यूनीवर्सल मास्टरर्स विश्व शान्ति के लिए परम आवश्यक है। लेकिन इसे इंसान स्वयं में देखे, यह इंसान के व्यवहारिक जीवन में हो, स्वयं की उपल्बधि हो। तब ही 1, 2, 3- यू0बी0, यू0डी0 यू0एम0 की सार्थकता होगी। अन्यथा नहीं। जब दिल में मोहब्बत होगी, विश्वयापी प्रेम की भावना होगी। एक दूसरे को एक दूसरे की जरूरत होगी, पहले आप, पहले आप के लिए इंसान अपने को तैयार करेगा अर्थात अपने से पहले दूसरों को सुविधा देने के लिए प्राथमिकता देगा, दूसरों की उन्नति, तरक्की से खुश होगा और गिरते को उठायेगा तो यही यूनिवर्सल ब्रदरहुड (विश्वयापी) भाईचारा बन जायेगा। फिर शस्त्र उठाने की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी। एक दूसरे को भरोसे के लायक बनाना है तथा एक दूसरे पर भरोसा करना होगा। प्रेम इंसान से भी करना होगा प्रेम भगवान से भी करना होगा।

दस्तूर मोहब्बत का सिखाया नहीं जाता।
यह ऐसा सबक है जिसे पढ़ाया नहीं जाता।।

यूनिवर्सल मास्टरर्स से तात्पर्य है एकाकार होना, अद्वितीय, दूसरा कोई नहीं यह अन्तिम है। जो इस अवस्था को प्राप्त है वो तो हमेशा शान्त ही है। क्योंकि जब दूसरा कोई होगा तो विचार होंगे उनके कार्यरूप देने के लिए कर्म होंगे तो फिर वही चंचलता, अशान्ति बन जायेगी। जहां से शान्ति के लिए प्रयास शुरू किया था। विचार रहित, इच्छा रहित, अंहकार रहित, प्रयास रहित अवस्था ही परम अवस्था है। परमात्मा के साथ ऐसा मिलन कि यह होश यह आभास ही ना रहे कि मैं हूँ भी या नही। फिर प्रयास रहित प्रयास ही चलेगा जो स्वतः ही होगा। मौन स्वतः ही घटित होगा, खामोशी खुद ही कायम होगी।

सहली थी हर कमी मैंने मुस्कुराकर
मगर तेरी कमी मुझसे बर्दास्त ना हुई
मिली जब आंख तुझसे मेरी तो
दिल ही दिल में तुझसे बात हुई
खो गया तुझमे फिर मैं इस कदर कि
मेरी भी हस्ती हस्ती तेरी हुई।

(अमरपाल त्यागी)
गांव व पोस्ट- वैराफिरोजपुर
तहसील स्याना
जिला बुलन्दशहर (उ0प्र0) 203412
मो0 नं0 7055389362